



जल शक्ति मंत्रालय
जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग
MINISTRY OF JAL SHAKTI
DEPARTMENT OF WATER RESOURCES,
RIVER DEVELOPMENT & GANGA REJUVENATION



save
water

जल चर्चा

AUGUST- 2020



जल शक्ति का पहला वर्ष 2019-20
जल शक्ति – जन शक्ति
जल प्रबंधन में सबकी भागीदारी



On the completion of one year of Jal Shakti Abhiyan, Shri Gajendra Singh Shekhawat, Union Minister for Jal Shakti, presented a booklet to Hon. President and Hon. Vice President of India.



CORONAVIRUS

PREVENTION AND SOLUTION

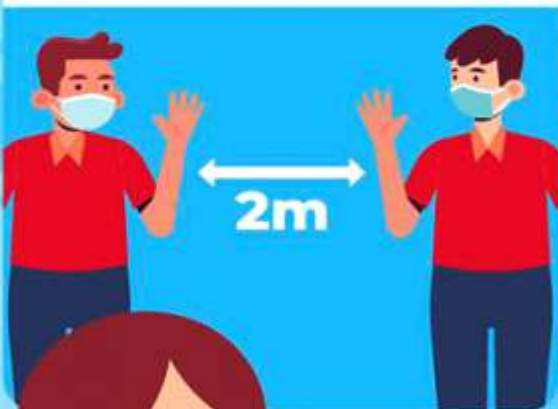
WEAR A MASK



WASH YOUR HAND



SOCIAL DISTANCING



TEMPERATURE CHECK



Wash your hands with soap and water every time you come back home from outside.

DON'T FORGET TO CLOSE THE TAP WHILE SOAPING YOUR HANDS & CONTRIBUTE TO SAVE WATER

CONTENTS

• From the Chief Editor's Desk	2
• घौस अली शाह की बावली	3
• सिंध नदी	4
• Conservation - MGNREGA	5
• Water Heroes	6
• River Rejuvenation - KOSI	7
• PMKSY	8
• जल योद्धा	9
• 15वीं 'वाटर टॉक'	10
• धारोई बांध	11
• Know Zone	12
• Campaign	13-15
• Namami Gange	16-18
• People's Initiative	19
• News In Brief	20-22
• Snippets	23-24
• NGO	25
• जन की बात	26
• In Newspaper	27
• Institute	28



3 घौस अली शाह की बावली



5 Conservation (MGNREGA)



11 धारोई बांध



25 NGO



4 सिंध नदी



7 River Rejuvenation (KOSI RIVER)



16-18 Namami Gange



28 INSTITUTE

Chief Editor : U.P. Singh

Editor : Sanjay Awasthi

Co-Editor : Girraj Goyal

Sub - Editor : Mohit Sharma

Design & Comm. Team : Fusion
Corporate
Solutions Pvt. Ltd.

Publisher : B.H.T. Vaiphei

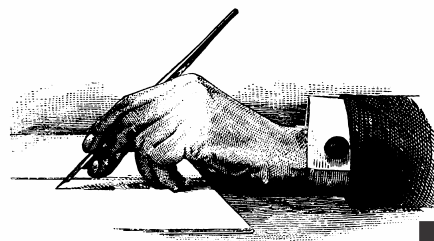
[as Under Secretary (IEC), Ministry of Jal Shakti, Do
WR, RD & GR
Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi - 110001]
Printer : Krishna Enterprises
2070/S, Chuna Mandi, Paharganj, New Delhi - 110055

Reproduction in any form is prohibited without written permission.
Any dispute related to the content of the magazine should be addressed
to the publisher.

“



From the Chief Editor's Desk



”

Even as the threat of Covid-19 lingers, it is encouraging to see people of India cautiously moving forward. I am sure we will soon come out of the crises as winners.

In the last edition of Jal Charcha, I had talked about 'Catch the Rain' campaign being undertaken by the National Water Mission of our Department. I am delighted to share with you that in the past few days we have been able to build a remarkable momentum in the campaign. Not only organizations like Airports Authority of India, Central Armed Police Forces, Indian Air Force etc. apprised us of the activities undertaken by them for rainwater harvesting, more and more positive responses are pouring-in supporting 'Catch the Rain' campaign. I thank all of them for their kind gestures. Within this campaign, a number of webinars were organised in July with various stakeholders and a new series of discussions with District Collectors has also been initiated, which would go a long way in engaging the local administration. 'Catch the Rain' campaign is also likely to play a significant role in the Jal Shakti Abhiyan, which has already entered into its second year. Our Hon. Minister recently presented a booklet 'One Year of Jal Shakti' to the Hon. President and the Hon. Vice-President of India and apprised them of the work done in the first year of the Abhiyan.

The inclusion of Namami Gange Project in Prime Minister's Awards for Excellence in Public Administration 2020 was a proud moment for the Department. In this regard, all District Ganga Committees have been asked to submit their nominations for the prestigious Award. It is our firm belief that the effective involvement and action at the district level can contribute immensely to the cause of water conservation in general and river rejuvenation in particular.

Under PMKSY-AIBP, we are sharing with you the success story of completion of Narmada Canal Project that runs for about 532 km from the Sardar Sarovar Dam in Gujarat up to Jalore and Barmer districts of Rajasthan to fulfill the irrigation and drinking water needs of 233 and 1541 villages in Rajasthan respectively. Within Gujarat also, the Narmada Canal provides water to thousands of villages and households. One such village is Norta Vanta which has become water-sufficient by successfully using and storing the waters of Narmada Canal through water conservation structures constructed under MGNREGA.

This issue of Jal Charcha also sheds light on the inspirational stories of Ms. Kalpana Ramesh, a Hyderabad-based architect-turned-water conservationist and Padma Shri Mr. Mahesh Sharma, famously called as 'Gandhi of Jhabua' in Water Heroes and 15th Water Talk sections respectively. To make Jal Charcha more student-friendly, we have also included a poster series by Shantilal Muttha Foundation that spreads awareness on water conservation among children.

All in all, this issue of Jal Charcha offers an insight into various facets of water conservation and I hope that it will be a reading treat to people from different walks of life.

Warm Regards

(Upendra Prasad Singh)

घौस अली शाह की बावली

देश भर में 'कॉरपोरेट' हब के नाम से मशहूर गुरुग्राम अपनी एक और अमूल्य धरोहर के लिए मशहूर है। इसी धरोहर के बारे में हम आपको इस लेख के द्वारा बताने जा रहे हैं। जल चर्चा के प्रत्येक संस्करण में हम आपको जल संरक्षण की प्राचीन भारतीय परंपरा से परिचित कराने का प्रयास करते हैं। इसी कड़ी में आगे बढ़ते हुए इस बार हम आपके साथ हरियाणा स्थित 'घौस अली शाह की बावली' से जुड़े कुछ रोचक तथ्य व किस्से साझा कर रहे हैं।

गुरुग्राम की खूबसूरती में चार चांद लगाती यह बावली झज्जर रोड पर फारुखनगर नामक गाँव में स्थित है। इसका इतिहास मुगल बादशाह फरुख सियर से जुड़ा है। उन्हीं के शासनकाल में यहाँ के स्थानीय अधिकारी, घौस अली शाह ने इस बावली का निर्माण कराया था, अतः इसे इनके नाम से जाना जाता है। हालांकि इस शहर में शीश महल और फारुखनगर किले समेत कुछ और पर्यटन स्थल भी हैं परंतु यह बावली यहाँ का मुख्य आकर्षण केंद्र है।

इस बावली का निर्माण अष्टभुज के आकार में किया गया है। बावली में ज़मीनी स्तर से नीचे 3 मंज़िलों का निर्माण किया गया है। सबसे निचली मंज़िल के मध्य में जल का कुंड स्थित है। इस कुंड के चारों तरफ, ऊपरी मंज़िलों पर खूबसूरत आर्च वाले बरामदे बनाए गए हैं। ये बरामदे देखने में तुर्की शैली के हमाम जैसे लगते हैं। इस बावली का निर्माण 18वीं शताब्दी में लोगों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर करवाया गया था।

इसके स्वरूप को देख कर यह कहा जा सकता है कि यह बावली केवल नगरीय जलापूर्ति नहीं करती थी बल्कि लोगों के दैनिक जीवन में मेलजोल वाले स्थल के रूप में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी। कुंड के ऊपर वाली मंज़िलों पर जो बरामदे बनाए गए हैं, वे इस तरह से ही बनाए गए हैं ताकि लोग वहाँ रुक कर विश्राम कर पाएँ और जल की ठंडक में सामाजिक कार्यक्रम भी अच्छे से पूर्ण हो पाएँ। ऐसा माना जाता है कि केवल आम लोग ही नहीं, किन्तु रानियाँ व राज परिवार की अन्य महिलाएँ भी यहाँ मनोरंजन हेतु आया करती थी। इस बावली की देखभाल अब भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग कर रहा है, जिसका परिणाम इसकी बदली हुई रंगत में साफ़ दिखाई देता है। पुरातत्व विभाग ने कई वर्षों से वीरान पड़ी इस बावली का सौन्दर्यीकरण कर के इसे नया और बेहतर स्वरूप प्रदान किया है।

आज के समय की विडंबना यही है कि हम कॉरपोरेट हब और यहाँ स्थित कम्पनियों के बारे में तो जानते हैं पर लेकिन यहीं पास में स्थित इस बहुमूल्य ऐतिहासिक जल संरक्षण वाली धरोहर से अनभिज्ञ हैं। आपको यह जान कर आश्चर्य होगा कि अधिकांश लोगों के इस लापरवाह रवैये के बावजूद भी यह बावली अब लोगों के बीच अपनी पहचान बना रही है। अब यह बावली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के फोटो वॉक्स, हेरिटेज वॉक्स और फोटोशूट के लिए नया 'स्पॉट' बनती जा रही है, जिस कारण युवाओं का ध्यान प्राचीन भारतीय जल संरक्षण परंपरा की ओर आकर्षित हो रहा है। तो जब आप अगली बार गुरुग्राम जाएँ और ऊँची इमारतों के बीच कैद महसूस करें, तो खुद को एक 'ब्रेक' दें और यह बावली घूमने ज़रूर जाएँ।



सिंध नदी

सिंध नदी यमुना नदी की एक सहायक नदी है जो मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश राज्यों से हो कर बहती है। मध्य प्रदेश में 207 नदियों का उद्गम स्रोत है जिस कारण इस राज्य को नदियों का मायका भी कहा जाता है। सिंध नदी विदिशा जिले के मालवा पठार से आरंभ होती है और मध्य प्रदेश में गुना, अशोक नगर, शिवपुरी, दतिया, ग्वालियर, मुरैना और भिंड जिलों से बहती हुई उत्तर व उत्तर-पूर्वी दिशा में आगे बढ़ती है तथा अंत में उत्तर प्रदेश के जालौन जिले में यमुना नदी में मिल जाती है। सिंध एवं यमुना नदी का यह संगम चंबल - यमुना संगम के ठीक बाद होता है। सिंध नदी की कुल लंबाई 470 किलोमीटर है, जिसमें से 461 किलोमीटर मध्य प्रदेश में और केवल 9 किलोमीटर उत्तर प्रदेश में बहती है।

सिंध के किनारे रतनगढ़ माता का मंदिर भी स्थित है जहाँ भाई-दूज के दिन हजारों भक्त माता के दर्शन करने हेतु आते हैं। इस नदी पर सेवड़ा में सनकुआ के निकट अत्यधिक सौन्दर्य वाला जलप्रपात स्थित है। दतिया स्थित सनकुआ धाम सिंध नदी के तट पर स्थित सुप्रसिद्ध धार्मिक स्थलों में से एक है जिसका एक बहुत बड़ा कारण यहाँ आयोजित होने वाला दिवाली मेला है। सनकुआ कुंड में स्नान का विशेष महत्व माना गया है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि यह एकमात्र ऐसा स्थान है जहाँ ब्रह्मा के मानस पुत्रों, सनक, सनातन, सनंदन और सनतकुमार के मंदिर देखने को मिलते हैं। ऐसा माना जाता है कि ब्रह्मपुत्र, सनतकुमार ने षट रिपु का संहार इसी के तट पर किया था।

इस नदी के किनारे पतझड़ वाले वन एवं कंटेली झाड़ियाँ पाई जाती हैं। केवल इस नदी के ही कारण इन वनों का विस्तार 120 किलोमीटर लम्बे-चौड़े भू-भाग पर है। सेवड़ा के निकट ही सिंध के तट पर एक शिवलिंग स्थित है, जो कि मानव की मुखाकृति का है। ऐसा माना जाता है कि इसे अहीरों के प्राचीन राजकुल द्वारा पूजा जाता था। सिंध नदी की प्रमुख सहायक नदियाँ- पहुज, क्वारी और महुअर (समोहा) हैं।

क्वारी नदी, जिसे कुवारी या कुंआरी नदी भी कहा जाता है, मध्य प्रदेश के श्योपुर, मुरैना और भिंड जिलों से होकर बहती है। यह नदी देवपुरा गाँव के पास से निकलती है। क्वारी नदी उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में सिंध नदी में मिल जाती है।

पहुज नदी, उत्तर प्रदेश के झाँसी शहर से होकर बहने वाली नदी है। इसे कई धार्मिक ग्रंथों में “पुष्पावती” नाम से भी वर्णित किया गया है। यह बुंदेलखंड क्षेत्र से होकर बहती है और उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की सीमा को विभाजित करने में प्रमुख भूमिका निभाती है।

महुअर नदी, सिंध नदी की एक छोटी सहायक नदी है। महुअर को स्थानीय रूप से समोहा नदी के रूप में भी जाना जाता है। यह करेरा वन्य-जीव अभ्यारण्य से होकर गुजरती है। शिवपुरी जिले में सिंध नदी पर मणिखेड़ा बांध का निर्माण किया गया है। इसके नीचे की ओर मोहिनी सागर नामक एक पिक-अप वियर स्थित है।



Pond Deepened, Check Dam Constructed to Ensure Water Security in Norta Vanta, Gujarat

The moderate annual rainfall of about 600-700 mm made the arid Norta Vanta village of Patan district in Gujarat vulnerable and prone to droughts. The farmers, therefore, depended a great deal on groundwater for irrigation and only 10% farmers could cultivate during all three seasons. In order to change this situation, the Gram Sabha decided to take up the water conservation initiatives under MGNREGA to augment the water storage capacity of the village. The local authorities took the decision of deepening Pipariya Talav, a local pond and clearing field channels besides constructing a check dam.

The technical team of MGNREGA provided the necessary assistance in planning and execution of water conservation works. The construction of check dam, deepening of Pipariya Talav, de-silting of existing field channels and construction of new channels were done during 2018– 2019 in convergence with the Sujalam Sufalam Jal Sanchay Abhiyan (SSJSA) at a total cost of Rs. 4.77 lakh.

The situation in the village changed drastically. The check dams enabled the flow of water from Narmada Canal and annual rain to the rejuvenated Pipariya Talav whose storage capacity increased manifold after the work. The water is now available for farming and for consumption of

livestock round-the-year. About 100 acres of agricultural land has been brought under cultivation with the help of the new water conservation initiatives and about 178 households have benefitted. In 2019 monsoon, a total of 11,780 m³ water was stored in the pond.

Shri Amar Kesaji Thakore, a local farmer said, “Water from the canal now flows directly to the pond and the farmers are able to draw water using pumps directly to their farms. Earlier, no water was available except during rains.”

The local Vanzara community benefitted the most in terms of getting employment under MGNREGA. Shri DalajiJoraji Vanzara, a local villager said, “I have worked under MGNREGA during the construction of check dam. My wife also worked on the site. I belong to the Vanzara community. We are around 15 Vanzara families in the village and all are landless. I worked for three weeks in Mahatma Gandhi NREGA and earned Rs. 3,900 as wage.” The efforts done for water conservation under MGNREGA will go a long way in ensuring water security in Indian villages.



Winners of "Water Heroes Share Your Stories" Contest (April & May 2020)

Sh. Pratham Agarwal

Sh. Pratham Agarwal, Executive Engineer, South Central Railways played a crucial role in construction of trenches in villages that fall under Ongole sub-division of Railways. The work was done along the railway track in this jurisdiction as part of the water conservation activities conducted under the 'Convergence Scheme of MGNREGS with Railways'. Not only have the water conservation structures built as part of this initiative fulfilled the drinking water needs of people of the region and the livestock, it has resulted in increase in groundwater levels as well.

Sh. Saksham Bansal

At a very young age, Saksham Bansal, a school student has designed an automated tap to wash hands without any wastage of water. This tap can save upto 5 litres of water per person in a day.

Sh. Shashank Singh

Sh. Shashank Singh worked to provide a better life to the residents of Rasabeda village, Ranchi as part of 'Rasabeda Water Project' by providing them requisite facilities such as access to safe drinking water, surface water management, rainwater harvesting and groundwater recharge which improved the lives of the people there.

Sh. Sunil Shrivastava

Under the leadership of Sh. Sunil Shrivastava in Reliance Foundation, Jhalara Village in Madhya Pradesh and many other villages became water-secure through innovative low-cost affordable solutions. He designed a system called 'Holiya' in 2016 to recharge groundwater with flood water which can be later used for irrigation. He also innovated a low-cost check dam for basaltic regions, applied ferro-cement technology for water tanks, check dams and many more solutions which helped villages to become drought resilient.

Smt. Kalpana Pandey

Smt. Kalpana Pandey, Director of Sarthi Welfare Trust, a non-profit organisation based in Uttar Pradesh has been working towards water conservation along with her team members. She participated in the cleanliness drive for rivers Hindon and Kali, went to rural areas to educate locals about water conservation practices, held seminars in schools to spread awareness about water conservation among children, and also conducted tree plantation drives to aid groundwater recharge.

Sh. Amandeep Shoor

Sh. Amandeep Shoor is a resident of Khamra village in Madhya Pradesh. He has been working to spread awareness about water conservation in his village. He took the initiative to install a rainwater harvesting system in the school compound of Government Senior Secondary School of his village by creating a soak pit under the MGNREGA scheme. As a result, the village has experienced an increase in the groundwater level.

Smt. Savitri Shrivastava

Smt. Savitri Shrivastava is known as the 'Water Woman' of Gwalior, a city in Madhya Pradesh. She independently started her campaign to save water in year 2003. Today, she has installed many rainwater harvesting plants in schools, colleges, domestic as well as on roads, in different regions. She is now working towards the rejuvenation of traditional wells and bawadis.

A Reverberating Revival Story of Kosi River

Kosi River in Uttarakhand, which is the lifeline of Almora town, saw a steep decline in its flow (around 20 times decrease) in the past two decades and the very survival of the people of the district became questionable. This led the district administration to launch the largest ever plantation drive which was carried out in one hour as part of phase-1 of its river revival project in Almora district (Hawalbag and Takula blocks) in 2018. More than 1.67 lakh saplings with over 90% survival rate were planted across 110 plantation sites with the help of students, MGNREGA workers, Army, Sashastra Seema Bal(SSB) force units and government officials. GIS mapping and tracking of the plantation sites is being done. This activity was registered in the Limca Book of Records.

Phase-2 of the Kosi rejuvenation works included construction of groundwater recharge structures; infiltration trenches, infiltration holes, bio check dams, dry stone check dams and ponds. The following numbers of structures were made to hold rainwater and recharge groundwater table:

- Infiltration trenches – 11,95,057 meters
- Infiltration holes – 1,84,64,280 meters
- Bio-check dams – 2,000
- Dry stone check dams – 152
- Ponds – 375

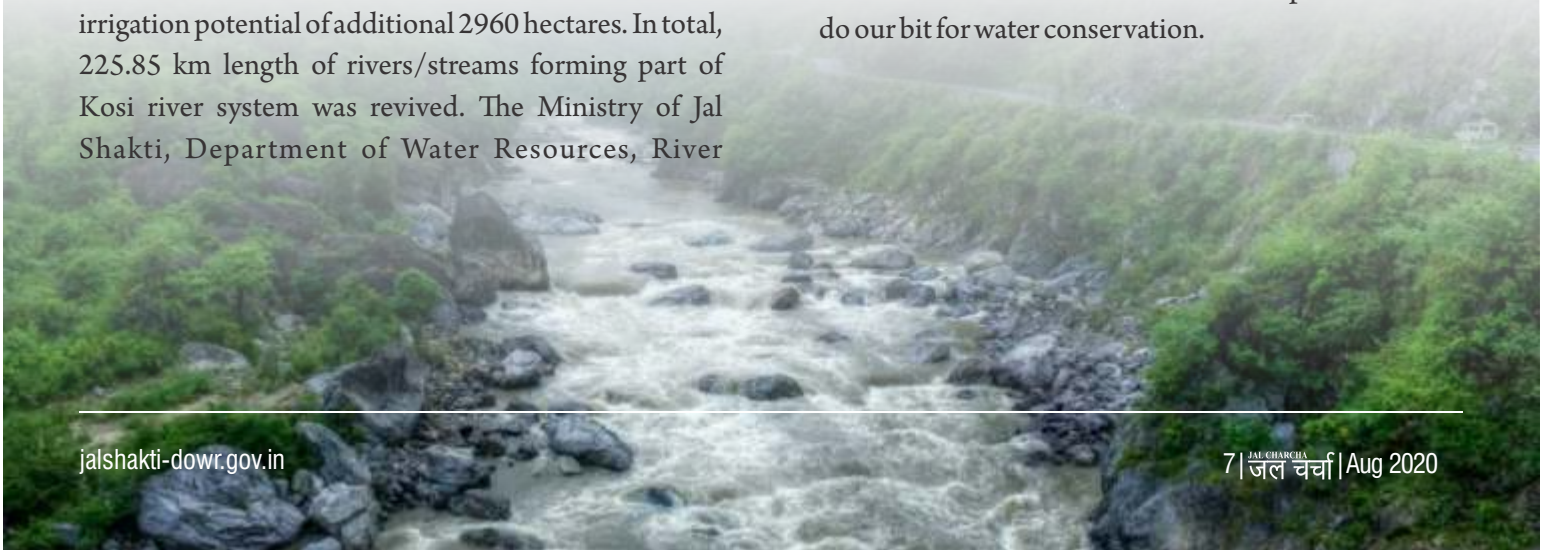
These efforts resulted in conservation of 74 million litres of water in the irrigation sector, which created the irrigation potential of additional 2960 hectares. In total, 225.85 km length of rivers/streams forming part of Kosi river system was revived. The Ministry of Jal Shakti, Department of Water Resources, River

Development and Ganga Rejuvenation acknowledged these efforts by giving Almora district first prize in Best District, Revival of River category (North Zone) at the National Water Awards 2018.

Rainwater Harvesting in Almora District

Using Ridge-to-Valley approach, the efforts were carried out to increase water in the catchment area for Kosi River. This was done by creating rainwater harvesting facilities in about 80% government buildings (including offices, residences) in Almora district. In villages, more and more families are still assisted with construction of water harvesting tanks. The financial estimates have been prepared for few buildings which don't have rainwater harvesting facilities to make Almora a district with 100% rainwater harvesting facilities. This helps in keeping the revival of Kosi River sustainable as rainwater harvesting decreases the burden of the river to meet the water needs of the town.

This story of revival of Kosi River in Almora district holds immense promise for Jal Shakti Abhiyan being implemented under the leadership of Prime Minister Shri Narendra Modi. The action based on scientific studies and people's involvement at the grassroots level is a key to effective management of water as shown by Almora district administration and is worth emulating. Our rivers are our pride and source of sustenance of our civilization. Efforts like these should inspire all of us to do our bit for water conservation.



Narmada Waters Makes Rajasthan Greener, Farmers Rejoice

Supply-side management has been an age-old practice for water management in India. The Narmada Canal Project has brought about a paradigm shift in respect of supply-side management as well as demand-side management, which is a unique and renewed beginning of water management in India.

Some of the areas of Rajasthan face acute water shortage due to irregular and scanty rainfall. In order to meet the long-term demands of Rajasthan, waters of Narmada River has now reached the State after the completion of the Narmada Canal Project under Prime Minister Shri Narendra Modi. It envisaged providing irrigation and drinking water to Jalore and Barmer districts of Rajasthan, which are drought prone and part of the great Indian Thar desert. Through this project, 0.5 Million Acre Feet (MAF) of water which was allotted to Rajasthan from Sardar Sarovar Dam is now effectively being used for the benefit of these areas through micro-irrigation.

The Narmada Main Canal off-taking from Sardar Sarovar Dam enters Rajasthan after traversing a distance of 458.3 kilometres. After entering Rajasthan, the canal runs for 74 kilometres, also known as Narmada Canal (Rajasthan Portion) Project. Twelve main distributaries and 2 sub-distributaries emerge from main canal. The total length of distribution system comprising of distributaries, minors and

sub-minors is about 1719 kilometres.

The project, which was initially planned to cover 1.35 lakh hectares of land for irrigation is now providing irrigation facilities to 2.46 lakh hectares of land. This miracle happened due to mandatorily switching over to micro-irrigation, which is central to the PM's vision of Per Drop More Crop. Through micro-irrigation, both demand-side management and supply-side management are being done, making this project path breaking in water management for agricultural use.

Through this project, the number of villages which benefit agriculturally from the Narmada Canal also increased from 89 to 233. In addition, this project also provides drinking water facilities to 1,541 villages of Jalore and Barmer districts of Rajasthan. The irrigation potential of 2.46 lakh hectares has been created at a total cost of Rs. 2551.03 crore. Total Central Assistance (CA) and State Share (from NABARD) of Rs. 1511.86 crore and Rs. 252.44 crore respectively was provided for the project.

Shri Padma Ram, a farmer from Berigaon village, who got benefitted from the Narmada Canal Project said: "Earlier, we could hardly sow one crop, that too when it rained. Ever since Narmada water has come to our village, we can sow 2-3 crops every season even if it doesn't rain."



ब्लू हैदराबाद और कल्पना रमेश

जल चर्चा के इस अंक की हमारी जल योद्धा कल्पना रमेश हैं। आप इन्हें अवश्य ही जानते होंगे, ये न केवल देश की जल योद्धा हैं बल्कि महिला सशक्तिकरण का एक बड़ा उदाहरण हैं। महिला अंतर्राष्ट्रीय दिवस पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने इनकी कहानी 'She Inspires Us' हैशटैग के साथ साझा की थी। कल्पना आज देशभर के सभी लोगों के लिए जल संरक्षण का एक बड़ा प्रेरणास्रोत हैं। इस लेख द्वारा हम आपको कल्पना जी की जल संरक्षण की यात्रा के बारे में जानकारी देते हुए बताएंगे की कैसे हम खुद ही जल योद्धा बन सकते हैं।



कल्पना पेशे से आर्किटेक्ट हैं और उन्हें इंटीरियर डिजाइनिंग में भी दक्षता प्राप्त है। ये बताती हैं कि उनका पेशा जल संरक्षण की यात्रा में बड़ी ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि इसी के कारण वे 'आउट ऑफ़ द बॉक्स' सोच पाती हैं। इनका बचपन, पढाई-लिखाई सब बेंगलुरु में हुई है लेकिन शादी के कुछ समय बाद ये अमेरिका रहने गयी थीं। वहाँ से वापस आने के बाद ही उनकी जल संरक्षण की यह यात्रा आरम्भ हुई। अमेरिका से आने के बाद वे हैदराबाद में रहने आई और यहाँ पर उनका जल की विकट समस्या से सामना हुआ। उन्होंने देखा कि यहाँ जल आपूर्ति के लिए लोग टैंकर पर आश्रित थे जो उन्हें थोड़ा अजीब लगा। वे बताती हैं कि वे जल संकट से परिचित अवश्य थी लेकिन इसका सामना कभी नहीं किया था। तब उन्होंने सोचा की अपनी आवश्यकताओं के लिए साल भर टैंकर पर आश्रित रहना कोई समझदारी नहीं है, वो भी तब जब हमारे पास वर्षा जैसा अमूल्य जल स्रोत है। उन्होंने जो अपना घर बनाया वो इकोलॉजिकल, वाटर फ्रेंडली और मॉडर्न, तीनों तरह के घरों का समेकित उदाहरण है। वे कहती हैं कि वे अपने घर पर आई बारिश की एक बूँद को भी बर्बाद नहीं होने देती हैं।

जल संरक्षण की दिशा में जो सबसे महत्वपूर्ण मंत्र है, वह है 'रिड्यूस वेस्टेज'। जब हम जल को बर्बाद करना बंद करेंगे तब ही जल का न्यायसंगत उपयोग हो पाएगा। इसके लिए कल्पना बताती हैं कि हमें ग्रे वाटर का सही इस्तेमाल करना होगा। यह सही भी है क्योंकि जिस जल को पुनः प्रयोग में

लाया जा सकता है उसे बर्बाद करना उचित नहीं। वे सभी लोगों को 'सस्टेनेबल होम' बनाने की सलाह देती हैं, केवल इसलिए नहीं की इससे आप पर्यावरण के प्रति अपना योगदान देंगे बल्कि इसलिए भी क्योंकि इससे आपकी आर्थिक बचत भी होगी।

कल्पना ने 'ब्लू हैदराबाद' नाम से भी कैपेन चलाया है जिसमें वे लोगों को जल

संरक्षण करने और अपने पुराने जल स्रोतों को पुनर्जीवित करने की सीख देती हैं। इस अभियान में जुड़े सभी स्वयंसेवकों को भी वे यही प्रेरणा देती हैं कि वे पहले खुद ही जल संरक्षण करें तभी किसी दूसरे को सलाह दे सकते

हैं। वे कहती हैं कि भारत को फिलहाल विचारकों की नहीं बल्कि उन विचारों को व्यावहारिक जीवन में लागू करने वाले लोगों की आवश्यकता है। वे लगातार 'Be Your Own Water Warrior' यानी अपने जल योद्धा स्वयं बनने की ही सलाह देती हैं। कल्पना का कहना है कि जब लोग यह समझेंगे की जल संकट उन्हें कैसे प्रभावित कर रहा है या उनके आने वाली पीढ़ियों को कैसे प्रभावित करेगा, तब ही वे भी जल संरक्षण करेंगे।

भारत को फिलहाल
विचारकों की नहीं बल्कि उन
विचारों को व्यावहारिक
जीवन में लागू करने वाले
लोगों की आवश्यकता है।

कल्पना कहती हैं कि यदि देश के बच्चों को जल की महत्ता बताई जाए तो हम एक बेहतर भविष्य के बारे में सोच सकते हैं अन्यथा यह सब व्यर्थ ही होगा। वे यह भी कहती हैं कि यदि हमें बड़े पैमाने पर जल संरक्षण करना है तो घरों की महिलाओं को इसके लिए आगे आना होगा। वे केवल हाउसवाइफ नहीं होती बल्कि हाउस ऑर्गनाइजर भी होती हैं, यदि उन्हें सिखाया जाए और जल के महत्व से परिचित कराया जाए तो वे जल को घर में बेहतर तरीके से प्रयोग में ला सकती हैं। कल्पना अपने सकारात्मक प्रयासों के कारण 200 से भी अधिक बोर रोवाइव कर चुकी हैं और लगातार लोगों के साथ मिलकर वर्षा जल संचयन और कम्युनिटी बििल्डिंग जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर कार्य कर रही हैं। वे लोगों के लिए अंत में यही सन्देश देती हैं कि यदि हमें अपना जीवन सुरक्षित रखना है तो स्वयं अपने लिए जल योद्धा बनना होगा। आशा है आपको कल्पना रमेश का यह प्रेरणादायी किस्सा अवश्य ही अच्छा लगेगा और इस से प्रेरित हो कर आप स्वयं भी जल संरक्षित करेंगे।

15वीं 'वाटर टॉक'

15वीं 'वाटर टॉक' का आयोजन 17 जुलाई 2020 को राष्ट्रीय जल मिशन द्वारा वाटर डाइजेस्ट के सहयोग से वर्चुअल प्लेटफॉर्म पर कराया गया। इस वाटर टॉक में झाबुआ स्थित शिवगंगा फाउंडेशन के संस्थापक पद्मश्री श्री महेश शर्मा मुख्य वक्ता थे। जल शक्ति मंत्रालय के जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग के सचिव श्री यूपी सिंह और मंत्रालय के अन्य अधिकारियों ने इस वर्चुअल टॉक में भाग लिया। इसके अलावा देश भर से करीब 39,000 लोगों ने, विभाग के विभिन्न संगठनों के सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के जरिए इस कार्यक्रम को लाइव देखा।

श्री महेश शर्मा ने हलमा-जल आन्दोलन के बारे में बताते हुए स्थानीय परंपराओं के माध्यम से जल संकट से लड़ने की सीख दी। उन्होंने इस तथ्य पर जोर दिया कि जल संरक्षण के प्रयासों में सफलता के लिए सामुदायिक भागीदारी आवश्यक है। भील समुदाय में 'हलमा' एक कई हजार साल पुरानी परंपरा है जिसका मतलब है - पुकार या फिर सहायता के लिए आह्वान। श्री महेश शर्मा बताते हैं कि हलमा, संकट के समय में समुदाय के सदस्यों से एक विशेष संकट के समय स्वैच्छिक मदद का आह्वान है। उन्होंने बताया कि संकट के समय गाँव के सभी लोग उस व्यक्ति की सहायता के लिए आगे आते हैं जो किसी भी संकट में है और मदद मांग रहा है। इस परंपरा के तहत समुदाय के सदस्य समस्या के समाधान के बिना व्यक्ति का साथ नहीं छोड़ते और जो भी संभव हो पाता है उस अनुसार योगदान भी देते हैं। 'शिवगंगा' ने मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले में पानी के संकट की आम समस्या को दूर करने के लिए इस परंपरा का ही उपयोग किया।

झाबुआ में 'हलमा' परंपरा को प्रभावी ढंग से चलाने और जल संरक्षण करने की प्रक्रिया को प्रेजेंटेशन द्वारा सभी के साथ साझा किया। भागीरथ की कहानियों से प्रेरणा लेते हुए युवाओं के लिए जल संरक्षण पर कई कार्यक्रम चलाए गए। यह अभियान वर्षा जल संचयन, तालाब, चेक डैम, झीलों और कुओं जैसे जल निकायों के निर्माण और उन्हें पुनर्जीवित करने के लिए शुरू किया गया था। समुदाय में सामाजिक कल्याणकारी कार्यों के विषय पर जागरूकता फैलाने के लिए एक 'यात्रा' का भी आयोजन किया गया।

झाबुआ के लोगों ने हलमा के आह्वान पर सकारात्मक प्रतिक्रिया दी और क्षेत्र में कंटूर ट्रेंच बनाने हेतु हाथीपावा पहाड़ पर एकत्रित हुए। 2018 में, हाथीपावा में आयोजित हलमा में लगभग 12,000 ग्रामवासियों ने भाग लिया। इस में देशभर के विभिन्न शहरों के लोगों के साथ आईआईटी और आईआईएम के छात्र भी शामिल हुए। यह संख्या 2020 में बढ़कर 20,000 हो गई, इन सभी ने सामूहिक रूप से 40,000 कंटूर ट्रेंच का निर्माण किया। इससे 360 करोड़ लीटर पानी की उपलब्धता सुनिश्चित की गई है। कुल मिलाकर, हाथीपावा में 1,60,000 से अधिक कंटूर ट्रेंच बनाए गए हैं, जिसके परिणामस्वरूप क्षेत्र के आसपास के गांवों में लोगों को पानी का सतत स्रोत मिला है और साथ ही साथ कृषि उत्पादन में सुधार हुआ है। श्री शर्मा ने इन सकारात्मक बदलावों का श्रेय लोगों के समर्थन और भागीदारी को दिया। इसके बाद सामूहिक वृक्षारोपण अभियान के लिए भी 'हलमा' का आह्वान किया गया, जिसके परिणामस्वरूप स्थानीय ग्रामीणों द्वारा 21,000 से अधिक पौधों का वृक्षारोपण किया गया। 'हलमा' की एक विशेषता यह भी है कि यह एक समावेशी परंपरा है जिसमें गांव के युवाओं, बुजुर्गों और महिलाओं की भागीदारी शामिल है। झाबुआ का यह सामुदायिक विकास मॉडल, भविष्य में देश के दूसरे लोगों और क्षेत्रों के लिए प्रेरणा का काम कर सकता है। श्री शर्मा ने निष्कर्ष निकाला कि हलमा जैसी परंपराओं में एक ऐसी सामुदायिक ताकत छिपी है जो परमात्मा के लिए काम करने की प्रेरणा देती है।

श्री यूपी सिंह, सचिव, जल शक्ति मंत्रालय ने श्री महेश शर्मा के प्रयासों की प्रशंसा करते हुए कहा कि अपनी ग्रामीण पृष्ठभूमि के कारण वे भी इस परम्परा से खुद को जोड़ सकते हैं क्योंकि ग्रामीण परिवेशों में यह आम है। उन्होंने प्रभावी जल संरक्षण और प्रबंधन के लिए झाबुआ के हलमा जैसी परम्पराओं को मुख्य धारा में लाने पर जोर दिया।



धारोई बांध



धारोई बांध साबरमती नदी पर गुजरात के मेहसाणा जिले के धारोई ग्राम में स्थित है। यह बांध अहमदाबाद से लगभग 150 किलोमीटर की दूरी पर है। धारोई मिट्टी एवं चिनाई बांध की श्रेणी में आता है जिसका निर्माण वर्ष 1978 में पूर्ण हुआ था। धारोई बांध का मुख्य उद्देश्य सिंचाई एवं जल आपूर्ति है, हालांकि इसमें 1.4 मेगावाट क्षमता की जल विद्युत इकाई भी स्थित है। नींव के निम्नतम बिंदु से बांध की अधिकतम ऊँचाई 45.87 मीटर है और लंबाई 1.2 किलोमीटर है। बांध का कैचमेंट एरिया 5540 वर्ग किलोमीटर है जिसमें गुजरात का क्षेत्र लगभग 48 प्रतिशत है। बांध के जलाशय की सकल भंडारण क्षमता 907.88 मिलियन घन मीटर है। बांध का सिंचाई योग्य क्षेत्र 82,599 हेक्टेयर है, जिसमें दाईं और बाईं ओर का कमांड क्षेत्र क्रमशः 85 प्रतिशत एवं 15 प्रतिशत है। बांध के दाईं एवं बाईं ओर की नहरों की लंबाई क्रमशः 44 किलोमीटर एवं 29.52 किलोमीटर है। कुल 177 गाँव बांध के कमांड में स्थित हैं तथा लाभांविता हो रहे हैं। बांध में ओगी (Ogee) प्रकार का 219.46 मीटर लंबा स्पिलवे है जिसमें 12 रेडियल गेट लगे हैं। स्पिलवे से 21662 घन मीटर/सेकंड का प्रवाह निकलने की क्षमता है। बांध से अधिकतम प्रेक्षित बाढ़ 14158 घनमीटर/सेकंड रही है। केन्द्रीय जल आयोग के गांधीनगर स्थित क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा धारोई बांध हेतु इन्फ्लो फोरकास्ट जारी किया जाता है।



आओ कर के देखें

पृथ्वी पर कितना जल है? यह कहां से आता है?

यह करके देखें:

पृथ्वी के मानचित्र की सहायता से यह पता लगाएं कि पृथ्वी का कितना भाग जल से ढका हुआ है।

टिप: आप ग्राफ-पेपर का उपयोग कर सकते हैं।



समुद्र में कितना जल है?

पृथ्वी पर उपलब्ध कुल जल में से लगभग 1,33 5,000,000 घन किलोमीटर जल समुद्र में है। लेकिन, यह जल खारा होने के कारण अधिकांश स्थानों पर उपयोग लायक नहीं है।



शोध करें!

- महाराष्ट्र के किन जिलों में पर्याप्त पानी उपलब्ध है और किन जिलों में पानी की कमी है?
- महाराष्ट्र का मानचित्र लें और मोटे तौर से इस पर पानी की उपलब्धता या वर्षा की दर दर्शाएं।

पानी कैसे बनता है?



पृथ्वी की उत्पत्ति के दौरान हाइड्रोजन(H_2) के दो अणु और ऑक्सीजन (O) के एक अणु से मिलकर जल तैयार हुआ।

पृथ्वी की सतह पर सूर्य की ऊष्मा के कारण जल की वाष्प बनती है और यह वायुमंडल में जाती है। इससे बादल बनते हैं, जो ठंडा होकर बरसते हैं। यह जल फिर से वाष्पित होकर ऊपर जाता है। इसे हम जल-चक्र कहते हैं। यह चक्र नियमित रूप से चलता रहता है। इसके कारण जल के अणु नहीं बनते... हम जो जल पीते हैं उसके अणु पृथ्वी की उत्पत्ति या उससे भी अधिक पुराने हैं।

पृथ्वी पर कितना जल पीने योग्य है?



पृथ्वी पर उपलब्ध लगभग 1% जल पीने योग्य है। यह जल भूजल, तालाबों और नदियों में पाया जाता है।



विचार करें

कुछ वस्तुओं का उपयोग करते हुए नीचे दी गई जानकारी आप कैसे दर्शा सकते हैं:

- पृथ्वी पर 97% जल खारा है और उपयोग करने योग्य नहीं है।
- शेष 3% में 2% हिमनद और हिमशिखरों पर बर्फ के रूप में जमा जल उपयोग में नहीं लाया जा सकता है।
- शेष 1% से भी कम जल (नदियों और तालाबों का) उपयोग के लिए उपलब्ध है।



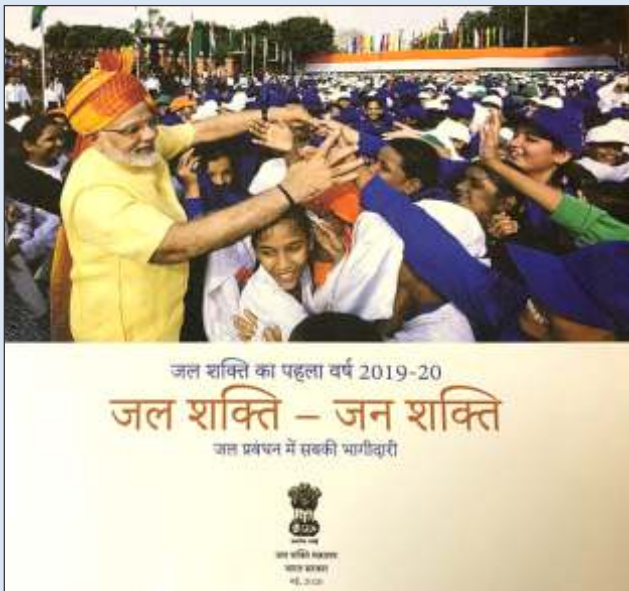
शोध करें!

- अपने क्षेत्र में जल के विभिन्न स्रोतों की सूची बनाएं।
- पता लगाएं कि इन स्रोतों में जल कहां से आता है।
- जल के स्रोत से उपयोग के स्थानों तक की यात्रा दर्शाने वाला चार्ट बनाएं।



शांतिलाल मुथ्था फाउंडेशन

One Year of Jal Shakti



Shri Gajendra Singh Shekhawat, Union Minister for Jal Shakti called on Shri Ramnath Kovind, Hon. President of India on 6th August 2020 and briefed him about the work being done in the Ministry of Jal Shakti. The erstwhile Ministries of Water Resources, River Development & Ganga Rejuvenation and Drinking Water & Sanitation were merged to form the Ministry of Jal Shakti in May 2019 for effective management of water through integrated approach. Shri Shekhawat presented a booklet on 'One Year of Jal Shakti' to the Hon. President. Later in the day, Shri Shekhawat also

called on Shri M. Venkaiah Naidu, Hon. Vice President of India to apprise him about the significant achievements of the Jal Shakti Ministry and presented him the copy of the booklet comprising an overview of the work done in the first year of Jal Shakti. The booklet also has details about the prominent programmes of Jal Shakti that includes Jal Jeevan Mission, Jal Shakti Abhiyan, Swachh Bharat Mission, Namami Gange Programme, Pradhan Mantri Krishi Sinchai Yojana – Accelerated Irrigation Benefit Project and Atal Bhujal Yojana. The booklet also sheds some light on water governance, research & development and international cooperation in Jal Shakti. The booklet ends with an ode to Father of the Nation Mahatma Gandhi.



'Catch The Rain'

National Water Mission (NWM), Department of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation, Ministry of Jal Shakti has launched a campaign - "Catch the Rain" - with the tagline "Catch the Rain, Where it Falls, When it Falls" to nudge the states and stakeholders to create appropriate Rainwater Harvesting Structures (RWHS) suitable to their respective climatic conditions. The active participation of people from all walks of life is at the helm of the campaign being led by Shri U.P. Singh, Secretary, Do WR, RD & GR, Ministry of Jal Shakti.

Under this campaign, drives to make check dams, water harvesting pits, rooftop RWH structures etc. are being taken up. In addition to this, stress is also being given to removal of encroachments, desilting of tanks and removal of obstructions in the channels which bring water to them, repairing of step wells, bore wells and unused wells to put water back into aquifers and improve groundwater situation.

In order to facilitate these activities, States and Union Territories (UTs) were requested to open 'Rain Centers' in each district including at Collectorates/Municipalities or Gram Panchayat offices. To ensure the effectiveness of these 'Rain Centers', it is advised that they have a dedicated mobile phone number and manned by an official trained in rainwater harvesting. The aim is to establish the 'Rain Centers' as the nodal point to all in the district to know everything about how to catch the rain, as it falls, where it falls.

It is urged through this campaign that the administration of all buildings should make sure they have rooftop rainwater harvesting structures to minimize the loss of rainwater. While in rural areas, it will help in improving soil moisture and groundwater levels, urban areas would benefit from it as it will reduce water logging to a great extent. Under the campaign, special focus is being given to first identify the water bodies in all districts and rejuvenate them.

Several dignitaries have endorsed the 'Catch the Rain' campaign including Shri M. Venkaiah Naidu, Hon. Vice President of India through video messages. Shri Naidu urged all citizens of the country to participate in the campaign and conserve water. Shri Gajendra Singh Shekhawat, Union Minister of Jal Shakti, Shri Rattan Lal Kataria, MoS, Ministry of Jal Shakti, Shri Rajiv Kumar, Vice Chairman, NITI Ayog, Shri Amitabh Kant, CEO, NITI Ayog, water activists like Shri Sonam Wangchuck and Dr. Anil Joshi, celebrities like Shri Pulela Gopichand and Sri Ravishankar are among who have given their messages to support the campaign.

All district collectors, heads of institutions like IIMs, IITs, Central Universities, Private Universities, Railway, Airport Authority, PSUs, Central Armed Police Forces, Sports Authority of India, Ordinance Factory Board etc. having large tracts of lands with them have been requested to take steps under the "Catch the Rain"

campaign. In April, a letter was also written by four Secretaries, including Shri U.P. Singh, Secretary, Do WR, RD & GR, to all the Chief Secretaries of the States and Union Territories to take up activities for water conservation.



ITBP, Katihar(Bihar)



ITBP, UDHAMPUR, JAMMU & KASHMIR(U.T)

Not many people are aware that a lot of good work is being done towards water conservation and to CATCH THE RAIN where it falls, when it falls.



Shri U. P. Singh

Namami Gange included in PM's Excellence Awards



The Namami Gange project has been included in the prestigious Prime Minister's Awards for Excellence in Public Administration 2020. While interacting with the District Magistrates (DMs) and other officials of the District Ganga Committees (DGCs) of Ganga Basin states, Shri Rajiv Ranjan Mishra, Director General, National Mission for Clean Ganga (NMCG) asked them to submit their nominations for this year's Prime Minister's Awards for Excellence in Public Administration. Shri Mishra said that various units of Namami Gange continued to operate even during the lockdown, which has resulted in better results than expected.

During the meetings, the District Collectors gave details of the activities taking place in their respective jurisdictions. These Committees work at the district level in collaboration with local residents for the cleanliness and rejuvenation of Ganga. After their constitution, there has been a big change in the cleanliness of the Ganga and in the rejuvenation efforts. The steps like organic farming and development of biological diversity along the banks of the Ganga are expected to increase the means of employment at the local level.

While Shri Mishra urged every DGC to file nominations portraying their best activities for the Award, he said that Uttar Pradesh has a good opportunity to present their achievements through DGCs for Ganga Rejuvenation. He added that economic activities are also benefiting from the efforts of the District Ganga Committees.

Shri Mishra said that the objective of the National Mission for Clean Ganga is not limited only to 'Nirmalta' and 'Aviralta' of Ganga. The steps are also being taken to work out the contours of Arth Ganga so that a sustainable socio-economic zone is developed around the Ganga and its tributaries, which will give a boost to the 'Atma Nirbhar Bharat' campaign.

Action Taken by NMCG

- Video conferencing were conducted with the District Magistrates/District Forest Officials of Uttarakhand, Uttar Pradesh and Bihar on 21st July, 23rd July and 28th July respectively.
- Apprised District Magistrates on the parameters for evaluating the performance.
- A meeting was conducted with all District Ganga Committees on 4th August.
- All District Ganga Committees in Uttarakhand (7), Uttar Pradesh (26), Bihar (14) and Jharkhand (1) registered for the Awards

What are District Ganga Committees?

In view of the significance of local authorities in the task of Ganga Rejuvenation, the constitution of District Ganga Protection Committees also known as District Ganga Committees, was made compulsory as per clause 53 (1) of the NMCG Authority order notified on 7th October 2016. A 13-member Committee with District Collector as its Chairperson was mandated to prevent, control and abate pollution in River Ganga and its tributaries. It creates a district level mechanism for addressing the intractable problem of pollution abatement of River Ganga.



Namami Gange



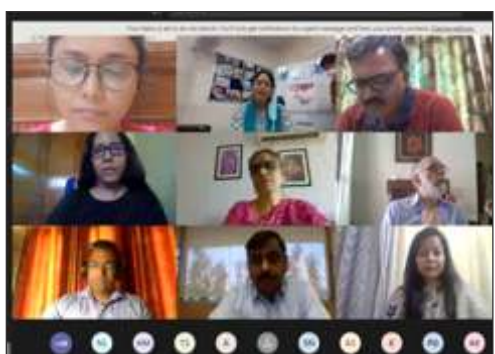
A meeting was held under the chairmanship of Shri U.P. Singh, Secretary, Department of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation, Ministry of Jal Shakti regarding the National Green Tribunal (NGT) matter dealing with 351 polluted river stretches in the country with the officials of NRCD & NMCG on 7th July 2020. Details of sewage and industrial management of 31 States/ Union Territories having 351 polluted river stretches were discussed.



Shri U.P. Singh, Secretary, Department of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation, Ministry of Jal Shakti chaired a virtual meeting on 22th July 2020 organised by National Mission for Clean Ganga on 'Mainstreaming Faecal Sludge and Septage Management in Ganga Basin to Achieve Citywide Sanitation for River Pollution Abatement'. Shri Rajiv Ranjan Mishra, Director General, NMCG was also present in the meeting.



Shri U.P. Singh, Secretary, Department of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation, Ministry of Jal Shakti, Shri Rajiv Ranjan Mishra, DG, NMCG and other senior officials launched SFD Phase 3 – CSE Initiative on 22nd July 2020 on 'Preparation of Shit Flow Diagrams (SFD) for Mainstreaming Effective Faecal Sludge and Septage Management (FSSM) in Ganga Basin'.



Shri U.P. Singh, Secretary, Department of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation, Ministry of Jal Shakti inaugurated the virtual ceremony of a three-day Online Orientation Workshop jointly organized by India Water Partnership & Centre for Youth and WAPCOS from 13th to 15th

July 2020. The workshop was organized for the young students who were selected as fellows of Cohort 2.0. In a motivational address, Shri Singh said: "Jal koi chinta ka vishay nahi parantu chinatan aur chetna ka vishay banana hai" (water should not be treated only as a matter of concern but as a matter of thinking and consciousness).



Shri U.P. Singh, Secretary, Department of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation, Ministry of Jal Shakti took a step for the environment by participating in a tree plantation event organised by NBCC on 12th July 2020.





Shri Trivendra Singh Rawat, Chief Minister of Uttarakhand, reviewed the progress of work at the site of 7.5 MLD Sewage Treatment Plant in Muni-Ki-Reti, Rishikesh on 23rd July 2020.



Shri Rajiv Ranjan Mishra, Director General, National Mission for Clean Ganga (NMCG) reviewed the ongoing projects on River Yamuna in Delhi under Namami Gange Programme on 9th July 2020.



Shri Rajiv Ranjan Mishra, Director General, National Mission for Clean Ganga (NMCG) participated in a webinar on 'A Water Future for Cities: How are Global Cities Preparing to Achieve Water Security' held on 15th July 2020.



Shri Rajiv Ranjan Mishra, DG, NMCG participated in a webinar on 'Opportunities for Co-treatment of Septage at Sewage Treatment Plants (STPs)' on 30th July 2020.



Shri Rajiv Ranjan Mishra, DG, NMCG spoke on 'Scientific Approach to River Rejuvenation – Case of Namami Gange' at a webinar organised by Vigyan Prasar on 28th July 2020.



Shri Rajiv Ranjan Mishra, DG, NMCG participated in an E-conclave on Eco-Agriculture Revolution organised by Agriculture Today on 8th July 2020.

On the occasion of World Nature Conservation Day, National Mission for Clean Ganga (NMCG) officially partnered with the Turtle Survival Alliance (India) Program towards strengthening aquatic wildlife and wetland conservation across the Gangetic Plain.



श्री राजीव रंजन मिश्रा, महानिदेशक, एनएमसीजी ने वर्चुअल मीटिंग के माध्यम से 25 July को बिहार के "पानी रे पानी" अभियान से जुड़े लोगों को "राज-समाज और नदी पुनर्जीवन" विषय पर सम्बोधित किया।

PEOPLE'S INITIATIVE

मार्च के आखिरी सप्ताह में देशभर में देशव्यापी लॉकडाउन की घोषणा की गई थी, अर्थात् सभी गतिविधियाँ बंद!! जहाँ एक तरफ इस लॉकडाउन ने भारत की अर्थव्यवस्था को बुरी तरह से प्रभावित किया, वहीं दूसरी तरफ यह पर्यावरण के लिए सजीव होने का अवसर बन गया। न केवल दिल्ली बल्कि देश के कई अत्यधिक प्रदूषण वाले शहरों की हवा एकदम स्वच्छ हो गई। लॉकडाउन में इसका स्वच्छ स्वरूप देखने के बाद यमुना के पुनरुद्धार की नई आस जगी है। यमुना की स्वच्छता व स्वच्छन्द प्रवाह को बनाए रखने के लिए दिल्ली के कुछ यमुना प्रेमी लगातार इस दिशा में अपने योगदान दे रहे हैं। हाल ही में इनके द्वारा यमुना के कालिंदी कुंज घाट पर सफाई अभियान चलाया गया। इस अभियान का आयोजन लहर फाउंडेशन और यमुना मिशन ने साथ मिलकर किया। इस अभियान में कई लोगों ने हिस्सा लिया और घाट से सारा कचरा साफ़ किया। हम आपको बता दें कि लहर फाउंडेशन वर्ष 2019 के मार्च से लगातार यमुना के घाटों पर सफाई अभियान चला रहा है। यमुना मिशन का भी यही मानना है कि यमुना, भारतीय संस्कृति में पूजनीय है, इसलिए इसे साफ़ रखना हमारा दायित्व है।





Central Groundwater Board (CGWB) has drilled 33 exploratory wells in East Medinipur district of West Bengal for data generation under National Project on Aquifer Management (NAQUIM). The work has been executed by WAPCOS. The wells were handed over to the district administration on 13th July 2020 by Shri Amlanjyoti Kar, Regional Director, CGWB, Kolkata in a meeting at Tamruk. Shri Purbo Medinipur, the district magistrate and other officials were present on the occasion. In the meeting, Sh. Kar explained the background and activities of NAQUIM, the flagship programme of our Ministry.



Pradhan Mantri Krishi Sinchai Yojana (PMKSY-HKKP GW) is a national mission to enhance irrigated area and agriculture productivity by utilizing prolific ground water aquifers. CGWB officials along with the members of the project implementing agency visited PMKSY - HKKP ground water sites in Nagaon District in Assam.



Shri V. Kunhambu, Regional Director, CGWB, Bangalore along with officials of Karnataka government carried out a field inspection of water conservation structures (multi arch check dams) constructed in the water stressed block - Gouribidanur Taluk of Chikaballapur district on 21st July 2020.



Central Groundwater Board (CGWB) carried out monitoring and inspection activities along with state groundwater geologist under Atal Bhujal Yojna project in Bangalore.



A preliminary yield test was carried out to determine the yield characteristics of a well at Sarachi, South 24 Paraganas in the Sunderban Delta on 12th July 2020. The site is located at the end of the delta front.



Shri U.P. Singh, Secretary, Department of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation, Ministry of Jal Shakti took part in a webinar as a keynote speaker organised by Green Dream Foundation and Smart Cities India Expo on 24th July 2020. The issues that were discussed during the webinar included strengthening water security for overall and pandemic scenarios, leveraging data and technologies for the benefit of industry, customers and environment, adopting indigenous solutions for reviving water bodies, sanitation, management and governance of water during and after COVID-19, water and wastewater management etc.



A well was drilled up to a depth of 107 m under groundwater exploration at Badheri, Samba district of Jammu & Kashmir.



As part of 'Catch the Rain' campaign, Shri Tejdeep Singh, Scientist D, NWM visited the NSG campus, Manesar to provide technical assistance to make the campus zero discharge as envisaged in the campaign. A presentation was also made to Director General, National Security Guard (NSG) at NSG Headquarters in Palam regarding rainwater harvesting in the Manesar complex.



An online 5-day training course on 'GW modeling using Visual MODFLOW' was organized from 6th to 10th July 2020 by National Institute of Hydrology (NIH), Roorkee under National Hydrology Project. The course was attended by 22 participants from different state groundwater departments, CGWB, NIH, and NMCG.



National Institute of Hydrology (NIH) organized a 5-day virtual training on 'HEC-HMS and HEC-RAS' software programs from 13th July to 17th July 2020 under the National Hydrology Project.



Shri U.P. Singh, Secretary, Department of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation, Ministry of Jal Shakti took part in the inaugural session of 'Global Water Management Conclave' organised by APAC Digital News Network on 25th July 2020. Other speakers included Ms. Jayamala Subramanian, CEO, Arghyam, Ms. Mehnaz Ansari from USTDA, Mr. V.R. Raman, Head Public Policy, WaterAid India and Mr. Henk Ovink from Netherlands Embassy.



The health assessment of the upstream coffer dam of the Polavaram Irrigation project, Andhra Pradesh was carried out by Central Soil and Materials Research Station (CSMRS). Laboratory testing was performed on the samples collected and suggestions were conveyed to the project authority.



Extensive soil laboratory testing was carried out by CSMRS on a large number of soil samples collected from 14 different borrow areas for the Kuri-Gongri hydro-electric project, Bhutan for ascertaining their suitability as clay core material for the construction of Earth and Rockfill Dam.





Airports Authority of India @AAI_Official - 4h

With water scarcity being one of the primary concerns, many #AAI Airports have recognised the significance of **rainwater harvesting** and measures like artificial recharge and water treatment plants as solutions in the monsoon season for water conservation. Supporting #CatchTheRain.

*Let's all come together
to make a difference!*

APAC
Digital News Network.com



MGNREGA ZP Chitradurga @MgnregaC - Aug 9

Chitradurga taluk Singere GP...Farmpond On going work....



kalpana ramesh @kalpana_designs - 3h

Plz also propogate right methods of watering trees Sir .Using less water and minimal soil erosion. This method below also helps #RainwaterHarvesting with roots growing deeper down vertically. All you need is a pipe and gravel before planting trees.



जल शक्ति मंत्रालय

से जुड़ी खबरों की जानकारी के लिए

हमसे जुड़ें:

जल शक्ति मंत्रालय का फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम पेज
आज ही फ़ॉलो करें



mowrrdgr



MoJSDoWRRDGR



ministry_of_jal_shakti

वृद्धि फाउंडेशन

हम सभी इस तथ्य से भली-भाँती परिचित हैं कि भारत आज जल संकट की समस्या का सामना कर रहा है। ऐसी गंभीर समस्या की स्थिति में एक राहत देने वाली बात यह है कि सरकार के अलावा ढेर सारे एनजीओ भी पर्यावरण और जल संरक्षण के क्षेत्र में एक साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं। हम इस तथ्य को नकार नहीं सकते कि अकेली सरकार के लिए जल जागरूकता को जन-जन तक पहुंचाना संभव नहीं है। वहीं एनजीओ की पहुँच अधिक लोगों तक होती है जिस कारण वे जनकल्याणकारी कार्यों में जन सहभागिता बेहतर रूप में सुनिश्चित कर सकते हैं।

भारत में आज ऐसे अनेकों एनजीओ हैं जो जल संरक्षण के क्षेत्र में कार्यरत हैं और ऐसे ही उदाहरणों में से एक है हैदराबाद का 'वृद्धि फाउंडेशन'। इसकी स्थापना वर्ष 2008 में पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से की गई थी। इस फाउंडेशन का उद्देश्य है कि वे अपने प्रयासों द्वारा जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों को कम कर सकें, ग्रामीण सतत विकास करने में सक्षम हों और पृथ्वी को न केवल इस पीढ़ी के लिए बल्कि आने वाली अन्य पीढ़ियों के लिए भी रहने लायक बना पाएं। ये संस्था मुख्यतः पर्यावरण और जल संरक्षण के लिए ही कार्य कर रही है। इनका मानना है कि यदि प्रत्येक व्यक्ति भी अपने स्तर पर जल संरक्षण हेतु छोटे-छोटे योगदान दे तो एक बड़े परिवर्तन की उम्मीद की जा सकती है और साथ ही साथ इस प्रकार हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को भी रहने के लिए बेहतर जगह दे सकते हैं।

यह एनजीओ ऐसे युवा लोगों की पहल है जिन्होंने पर्यावरण के महत्व को समझा और इस दिशा में कार्य करना शुरू किया। जिस आयु में लोग पैसा कमाने को अपना लक्ष्य बनाते हैं, उसी आयु में इन्होंने पर्यावरण संरक्षण को अपना लक्ष्य बना लिया। जब इस फाउंडेशन की स्थापना की गयी थी तो ये वृक्षारोपण इत्यादि में अधिक जुटे हुए थे, परन्तु फिर इन्होंने 2008 में 'SAVE' द्वारा आयोजित एक जल संरक्षण अभियान में भाग लिया। इस अभियान के तहत वहाँ वर्षा जल संचयन के लिए पिट्स बनवाई जा रही थी और लोगों को इसकी महत्ता भी समझाई जा रही थी। इन्हें यह देखकर प्रसन्नता हुई कि लोग भी ऐसे रचनात्मक अभियानों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। इसी के बाद से ये जल संरक्षण के क्षेत्र में भी काम करने लगे।

वृद्धि फाउंडेशन और अन्य कई एनजीओ ने मिलकर हैदराबाद में 'Water Hyderabad' नाम से एक अभियान शुरू किया। इस अभियान द्वारा बड़ी संख्या में लोगों को जल संरक्षण जैसे नेक कार्य के प्रति जागरूक किया गया और अपना योगदान देने हेतु प्रेरित किया गया। इस एनजीओ ने आज तक जल संरक्षण हेतु कई 'सिग्रेचर कैम्पेन' आयोजित किए हैं। ऐसे अभियानों की खास बात यह है कि लोग इन से सीधे तौर पर जुड़ाव महसूस

कर पाते हैं और उनके भीतर ज़िम्मेदारी की भावना पैदा होती है। इन्होंने पानी की लगातार कम होती मात्रा को ध्यान में रखते हुए एक बड़ी रैली का भी आयोजन किया, जिसमें 500 से भी अधिक स्वयंसेवकों ने भाग लिया।

संस्था का मानना है कि 'इकोलॉजिकल पावर्टी' को खत्म करने का एकमात्र उपाय वर्षा जल संरक्षण है क्योंकि वर्षा किसी की आय के आधार पर उससे भेदभाव नहीं करती है इसलिए यह संस्था इसे भी बढ़ावा दे रही है। वृद्धि फाउंडेशन द्वारा जल संरक्षण एवं पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में किए गए सभी कार्य उल्लेखनीय हैं। जल शक्ति मंत्रालय, वृद्धि फाउंडेशन को उनकी उपलब्धियों के लिए बधाई देता है और उनके साथ-साथ पृथ्वी पर रहने वाले सभी मनुष्यों के बेहतर भविष्य की कामना करता है।



Find the RWH system that suit your needs, but Catch the Rain!

Rainwater harvesting needs no introduction. Water is a scarce resource and needs to be conserved. To serve the purpose of conserving rainwater Ministry of Jal Shakti is working very hard. The Ministry has initiated Catch the Rain campaign to develop Rainwater Harvesting Systems all over the nation. India is a country where we have people from all types of income groups. If we are planning to include each and every person in the mission of water conservation then we need to make sure that the rainwater harvesting system and related infrastructure is affordable and accessible for all. Rainwater harvesting needs proper water storage solutions, so that storage of water is ensured for a longer period of time. Zincalume Steel Sheet Tanks could be one of the alternative solutions for rainwater harvesting. They are prefabricated and can be installed on-site within a single day and with minimum labour. Advantage of bolted steel tanks is that it has less logistics needs than Cemented Water Tanks. In the mountainous and desert areas e.g. Ladakh & Rajasthan

where construction material like cement and gravel etc, is not available locally and needs to be transported over long distance the cost of construction and labour of cemented tanks increases. Bolted steel tanks have life of 30-40 years with minimum maintenance cost and can be installed in the remote areas of the country. Moreover, Cement Tanks itself require water for construction and take days before being operable. Also Bolted Steel Tanks can be customized according to different needs and storage capacities ranging from 15,000 liters to 10,00,000 litres and even above it. According to urgency and scale of the cause Zincalume Steel Sheet Tanks can be a feasible solution for rainwater harvesting. If we want to conserve water then it should be done efficiently.

Nitin Thakur

Project Manager, Blueline Enterprises

Rohini, New Delhi



Feedback

'Jal charcha', the monthly magazine of 'Ministry of Jal Shakti' is a commendable and incomparable effort in the field of water conservation. Ministry of Jal Shakti is achieving new heights in water conservation by its efforts and it is informing people regarding every development through its magazine. Its articles specially 'Jal Yoddha series' is proving itself as an inspiration to people working in this field and to other people as well.

Name-Sonia Singh
TGT English, Kendriya Vidyalaya,
Keshavpuram, Delhi



Jal Charcha is an informative and interesting catalog showcasing different aspects of water along with the latest news and work on water. I liked the special add-on article dedicated to lockdown and its impact on water.

Name-Saveen Yadav,
Haryana

मियाँपुर रवीन्द्रनगर स्कूल

जल चर्चा के माध्यम से प्रत्येक माह हम आपके साथ ऐसे विद्यालयों के दिलचस्प किस्से और कहानियाँ साझा करते हैं, जिन्होंने जल संरक्षण के द्वारा अपने विद्यालयों की जल संबंधी समस्याओं का निदान किया है। विद्यालयों में जल संरक्षण केवल जल को संरक्षित करने के उद्देश्य से महत्वपूर्ण नहीं है। विद्यालय ऐसे स्थल हैं जहाँ एक राष्ट्र की मजबूत नींव का निर्माण होता है। एक सभ्य समाज के निर्माण में विद्यालयों की ही सबसे महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जो गुण बच्चे प्रशिक्षित अध्यापकों से अनुशासित माहिल में रहते हुए सीखते हैं वे सभी घर पर सीख पाना असंभव है इसलिए स्वाभाविक रूप से विद्यालयों में जल संरक्षण जैसे विषयों पर बच्चों को सीख देना अति आवश्यक है।

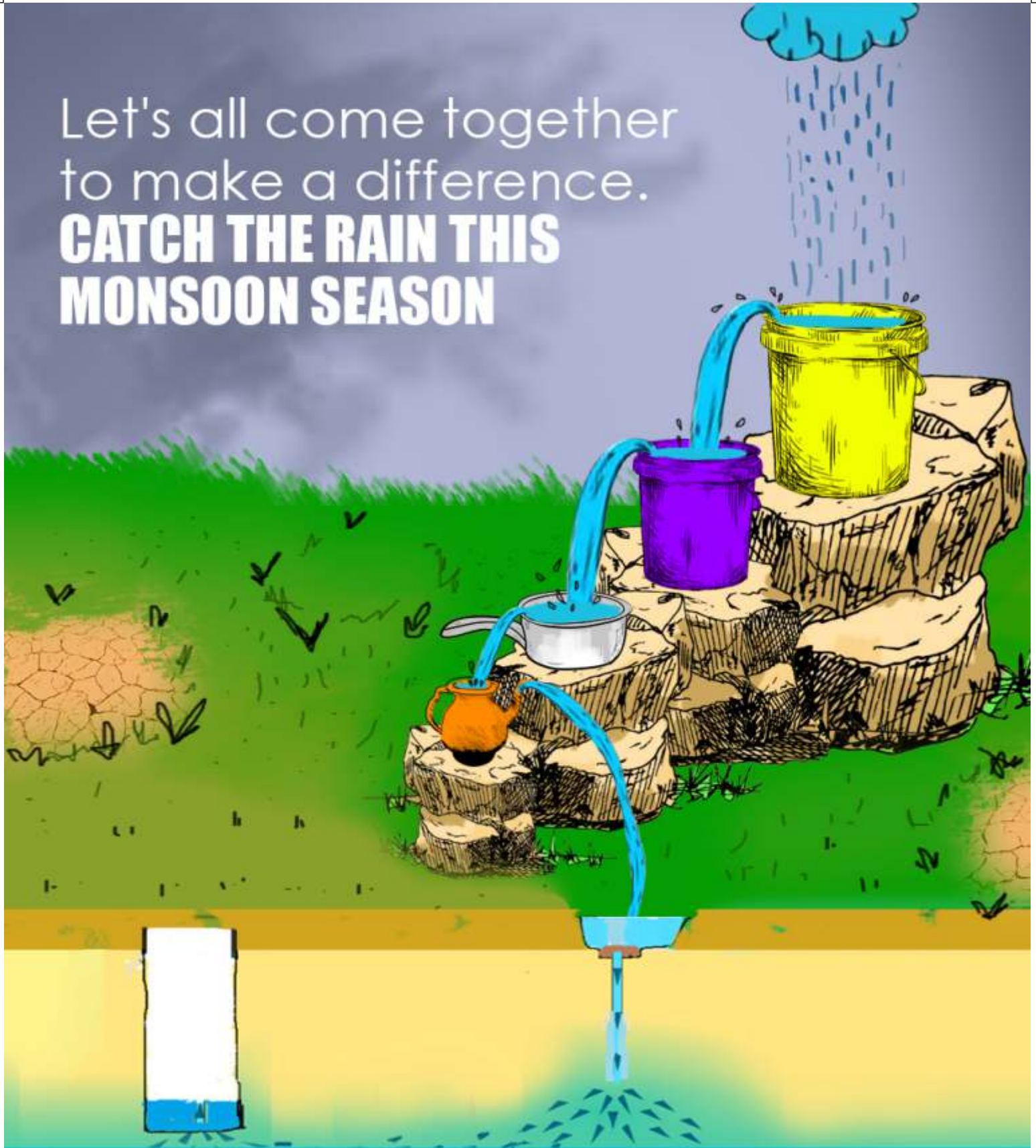
इस अंक में हम आपको उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी जिले में स्थित मियाँपुर रवीन्द्रनगर स्कूल के बारे में बताने जा रहे हैं। इस माध्यमिक विद्यालय की स्थापना वर्ष 2007 में की गई थी। यहाँ छठी कक्षा से लेकर आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों को शिक्षा दी जाती है। हम आपको बता दें कि स्थापना के 8 साल बाद तक भी यहाँ 'WASH' यानी वाटर, सैनिटेशन, हाईजीन जैसी सुविधाएं उपलब्ध नहीं थी। वर्ष 2015 में यहाँ प्रधानाचार्य सुरंजन मंडल बनें जिनके सकारात्मक दृष्टिकोण और बेहतर नेतृत्व के कारण इस विद्यालय का स्वरूप पूरी तरह ही बदल गया। यह सत्य ही है कि यदि नेतृत्व और मार्गदर्शन सही हो तो असंभव प्रतीत होने वाले कार्य भी संभव किए जा सकते हैं, उत्तर प्रदेश का यह विद्यालय भी इसी की मिसाल है। जो स्कूल पहले सामान्य सुविधाओं से भी वंचित था अब वही स्कूल तकनीक से लेस कई विद्यालयों के लिए आदर्श उदाहरण बन गया है।

विद्यालय के स्वरूप परिवर्तन हेतु श्री सुरंजन मंडल जी ने विद्यालय की दयनीय स्थिति का वास्तविक चित्रण ग्राम प्रधान श्रीमती सुषमा ढली जी के समक्ष किया। इन दोनों के ही प्रयासों का परिणाम है कि यह विद्यालय अब न केवल जल संरक्षण कर रहा है बल्कि चतुर्दिक विकास की राह पर अग्रसर है। इस विद्यालय में WASH सुविधाएं उपलब्ध नहीं थी, जो सबसे अधिक चिंता का विषय था। इसके निवारण हेतु यहाँ शौचालय बनवाए गए और पानी के लिए केवल पाइप वाले पानी या हैंडपंप पर ही आश्रित नहीं रहा गया बल्कि वर्षा जल संरक्षण संरचना भी बनवाई गई। अब वर्षा के समय इस संरचना के द्वारा ही यहाँ वर्षा जल एकत्रित किया जाता है, जिसे सालभर कई उद्देश्यों की पूर्ती हेतु इस्तेमाल किया जाता है। यहाँ हैंडपंप के अतिरिक्त जल को पेड़-पौधों तक पहुंचाने की भी व्यवस्था की गई है। इस पानी का इस्तेमाल विद्यालय के विशाल प्रांगण में सब्जी बोन के लिए भी किया जाता है। इस स्वच्छ व गुणों से युक्त सब्जियों का ही इस्तेमाल मिड-डे मील के लिए भी किया जाता है। यहाँ सौर ऊर्जा के महत्व को समझते हुए सोलर पैनल भी लगवाए गए हैं।

संक्षेप में कहा जाए तो यह विद्यालय वास्तविक रूप में 'आत्मनिर्भर' शब्द की परिभाषा को चरितार्थ करता है। यह विद्यालय सरकारी स्कूलों से जुड़ी सभी तरह की अवधारणाओं को पुनर्परिभाषित करता है। इस विद्यालय में बच्चों को स्वच्छता या पर्यावरण संरक्षण का केवल किताबी ज्ञान ही नहीं दिया जाता बल्कि उन्हें व्यावहारिक रूप से सिखाया भी जाता है। यही सही मायनों में विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास भी है। देश के सभी विद्यालयों को मियाँपुर कालोनी के रवीन्द्रनगर स्कूल से अवश्य ही प्रेरणा लेनी चाहिए और पर्यावरण संरक्षण की मुहिम में अपना योगदान देना चाहिए।



Let's all come together
to make a difference.
**CATCH THE RAIN THIS
MONSOON SEASON**



JOIN US EVERY THIRD FRIDAY ON

WATER TALK

3 PM - 5 PM

FOLLOW [FACEBOOK.COM/MOWRRDGR](https://www.facebook.com/MOWRRDGR) FOR UPDATES

कोरोना का कहर

कोरोना का चल रहा प्रहार,
महामारी की ले रफ्तार ।
तुहान लैब का घोर विषाणु ,
फैल रहा बन कर कीटाणु ॥

कोरोना तू कितना निष्ठुर है,
मानवता का भस्मासुर है ।
जीवन का सुख चैन है छीना,
मुश्किल किया सभी का जीना ॥

जीवन सब का है अनमोल,
असमय ही खो जाए न ।
विश्व में यह कोरोना,
बेरोकटोक छा जाए ना ॥

डॉक्टर, नर्स, सफाईकर्मी,
मानवता के ये रक्षक हैं ।
देवदूत बनकर ये आए,
कुटिल कोरोना के भक्षक हैं ॥

पवनपुत्र बन कर विज्ञानी,
संजीवनी ढूंढ निकालेंगे ।
चीन दैत्य के कठिन काल में,
संकट मोचक बन जाएंगे ।

सब कुछ रोका जग में इसने,
जीवन थामा पल में इसने ।
वैश्विक संकट, जन-धन की हानि,
चहुँ ओर फैल रही वीरानी ॥

ज्ञान दंभ जिन्हें परमाणु पर,
विवश सभी इस कीटाणु पर ।
पर मानव ने भी यह ठाना है,
हार को कब उसने माना है ॥

उचित फासला रखना सीखो,
सारा संकट कट जाएगा ।
मास्क कवच से घबराकर,
कोरोना दानव मिट जाएगा ॥

संकट की इस कठिन घड़ी में,
खाकी पहरेदार बने हैं ।
नमन हमारा इन वीरो को,
जो सच्चे सेवादार बने हैं ॥

हे जगत्राता विश्वविधाता ,
इस दानव से मुक्ति दिला दो ।
कोरोना नाशक अवतारी बन,
जग से हाहाकार मिटा दो ॥

अर्चना नवनी
CSMRS

Share your suggestions & feedback at media-mowr@nic.in